16

प्रार्थना पर व्यावहारिक संकेत (5:13-18)

वहां, ठीक आयत 17 में ही है, ''एलिय्याह भी तो हमारे समान दुख-सुख भोगी मनुष्य था।'' आपका को पता नहीं पर मुझे इससे दिक्कत आती है। जितनी भी कोशिश कर सका मुझे एलिय्याह को अपने जैसा होने की बात पर विचार करना कठिन लगा। यही दिक्कत है क्योंकि याकूब कहता है कि वह हमारे जैसा ही है!

आपको एलिय्याह याद है? वह पुराने नियम का खून खराबे वाला नबी था, जिसने दुष्ट राजा अहाब के साथ चिढ़कर उसे बताया कि उसके राज्य में तीन साल तक बारिश नहीं होगी। वह विश्वास का ऐसा निर्भय व्यक्ति था, जिसने एक लड़के के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की जो मर चुका था और उस लड़के का प्राण वापस आ गया था। वह परमेश्वर की सच्चाई का इतना निर्भय बचाव करने वाला था उसने करमेल पहाड़ की चोटी पर बाल के 450 नबियों और अशेरा के 400 नबियों को ''आकाश से आग'' वाले मुकाबले की चुनौती दी और फिर विजय के जश्न में उनके सिर धड़ से अलग कर दिए। कोई साधारण मानवीय जीव, वह भी इक्कीसवीं सदी में कैसे हो सकता है, जो ऐसे आदमी से मेल खाता हो?

जो बात हमें देखनी आवश्यक है वह यह है कि याकूब कह रहा है कि परमेश्वर के महान लोग वे हैं, जो प्रार्थना करते हैं! आवश्यक नहीं कि ये वही लोग हों, जो प्रार्थना की बातें करते हों, प्रार्थना में अपने विश्वास के विज्ञापन देते हों या प्रार्थना पर कुछ भी बोलने की कोशिश करते हों। परमेश्वर के सचमुच में महान लोग वे हैं जो विनम्र, समर्पित और सचमुच में प्रार्थना के लिए समय निकालते हैं। इन लोगों के पास हम से अधिक समय नहीं है; वे प्रार्थना को उनसे आवश्यक मानते हैं जिनसे हम में से अधिकतर लोगों के जीवन भरे हुए हैं। सामर्थी परमेश्वर में विश्वास रखना, जो अपने बच्चों की याचनाओं को सुनता और उनका उत्तर देता है, एलिय्याह की तरह इन लोगों ने प्रार्थना के द्वारा उसकी शक्ति का दावा किया।

अपने आप में याकूब की पत्री इतनी व्यावहारिक है कि स्वाभाविक रूप से आपको इसके प्रार्थना से जुड़े होने की उम्मीद होगी। इसका सम्बन्ध प्रार्थना से ही है! याकूब दिखाने वाला है कि हमारे विश्वास से प्रार्थना के हमारे जीवन में कैसे फर्क पड़ता है। हमारे वचन पाठ याकूब 5:13-18 में प्रर्थना के आधार के लिए कुछ संकेत हैं, जिनका अध्ययन ध्यान से करना आवश्यक है।

कठिन परिस्थितियां जो प्रार्थना के लिए पुकार करती हैं

पूरी पत्री में अन्य स्थानों की तरह याकूब इस ताड़ना को अत्यन्त व्यावहारिक बनाता है। वह उन समयों तथा परिस्थितियों की ओर ध्यान दिलाता है जिनमें प्रार्थना की आवश्यकता है। वह विशेषकर तीन समयों की बात करता है जब हमें प्रार्थना में अपने आपको परमेश्वर के सामने दीन बनाना चाहिए-कष्ट आने पर, बीमारी का सामना होने पर और पाप के हमारे ऊपर हावी होने पर भी। आइए इनमें से हर परिस्थिति पर एक एक करके विचार करते हैं।

पहले, दुख का सामना करने पर हमें प्रार्थना की आवश्यकता होती है। आयत 13 में, याकूब कहता है, ''तुम में कोई परेशान है ? उसे प्रार्थना करनी चाहिए'' (NIV)। अन्य अनुवादों में प्रयुक्त शब्द हमें NIV ''परेशानी'' शब्द के अर्थ को नापने में सहायता करते हैं। KJV में ''पीड़ित'' है। ASV, RSV तथा NASB ''दुखी'' शब्द का इस्तेमाल है। यूनानी शब्द इन सब शब्दों से व्यापक है। दिवंगत जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स ने इस शब्द का वर्णन इस प्रकार किया है:

> दुख यहां बीमारी और रोग से कुछ अधिक सामान्य कहीं और इसके इस्तेमाल से इसका अर्थ दुख सहना (2 तीमुथियुस 2:9) और सुसमाचारीय जीवन की कठिनाई (1 तीमुथियुस 2:3; 4:5) है। याकूब 5:10 वाले शब्द को ही दोहरा रहा है। जिसमें वह ''भविष्यवक्ताओं के दुख उठाने और धीरज धरने'' की बात करता है।[1]

शब्द की अवधारणा से आपको यह विचार मिलता है कि याकूब कह रहा है कि आपकी पीड़ा, शोक, वियोग, निराशा या दुख जो भी हो, प्रार्थना में लौट आओ। जब परमेश्वर उस प्रार्थना को सुनता और आवश्यक सहायता और सामर्थ के साथ उत्तर देता है, तो उसके प्रेम और सहायता के लिए परमेश्वर की महिमा करना न भूलें।

फिर याकूब ध्यान दिलाता है कि बीमारी के समय में हमें प्रार्थना में परमेश्वर पर निर्भर रहना चाहिए। ऐसा वह यह कहकर करता है, ''यदि तुम में कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मलकर उसके लिए प्रार्थना करें। और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा'' (5:14, 15क)। जब हम उन आयतों को पढ़ते हैं, तो अक्सर हम इस वचन के अर्थों पर डॉक्ट्रिन सम्बन्धी चर्चा में इतना इतना लिपट जाते हैं कि हम उस मुख्य ज़ोर को भूल जाते हैं कि याकूब कह रहा है *बीमारी के लिए प्रार्थना करो*।। यह हर शारीरिक व्याधि में सबसे आम है और याकूब इसे परमेश्वर के पास ले जाने के लिए कहता है (1 पतरस 5:6)। बीमार आदमी को चंगा कौन करता है? याकूब कहता है कि ''विश्वास के द्वारा की गई प्रार्थना।'' विश्वास की प्रार्थना वह प्रार्थना है जो इस विश्वास के साथ की जाती है कि परमेश्वर उसे कर सकता है जो हम मानते हैं (1:6; 1 यूहन्ना 5:14)।

हम विश्वास से मानते हैं, और कई बीमार चंगे नहीं होते! क्या बीमार हमेशा चंगे हो जाते हैं। गलत न समझें। मेरा मानना है कि हमारी प्रार्थनाएं परमेश्वर से हमारे संसार में कार्य करके चीज़ों को बदलवाती हैं। परमेश्वर के हिजकिय्याह की प्रार्थना के उत्तर में उसके जीवन के पन्द्रह साल बढ़ा देने का उदाहरण (2 राजाओं 20), यही दिखाता है। हमारी समझ की मुख्य बात 1 यूहन्ना 5:14 में हो सकती है, जहां यूहन्ना कहता है, ''यदि हम *उसकी इच्छा के अनुसार* ... कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है।'' कई बार *हमें* किसी चीज़ की इतनी अधिक आवश्यकता होती है कि हम यह ध्यान देना भूल जाते हैं कि परमेश्वर की इच्छा क्या है। हमें पीछे मुड़कर गतसमनी में यीशु की प्रार्थना की समीक्षा करनी चाहिए और उस प्रार्थना की आत्मा को समझना चाहिए। परमेश्वर को यह बताना गलत नहीं है कि हम क्या चाहते हैं, पर हमें उसकी जो भी इच्छा हो उसे स्वीकार करने की सामर्थ और साहस भी मांगना चाहिए।

तीसरा, याकूब कहता है कि हमें पाप के दोष के बोझ तले आने पर परमेश्वर पर निर्भर रहना आवश्यक है। 15ख और 16 आयतों में वह कहता है, ''... यदि उसने पाप भी किए हों,

तो उनकी भी क्षमा हो जाएगी। इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के साम्हने अपने-अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ।'' संदर्भ से यह स्पष्ट है कि आयत 15 का अन्तिम भाग उसी आदमी की बात कर रहा है, जिसका उल्लेख आयत 14 में और आयत 15 के पहले भाग में है। यह इस बात को नहीं सिखा रहा कि लोगों पर बीमारी उनके व्यक्तिगत पापों के परिणाम के रूप में ही आती है। परन्तु ऐसा लगता है कि यह सिखा रहा है कि बीमारी के समय में व्यक्ति को इस तथ्य पर विचार करने का अवसर मिल जाता है कि उसने अपने तन्दुरुस्ती के समय परमेश्वर को नकारा है और बीमार के समय में वह अपने पापों को मानने और क्षमा मांगने का निर्णय लेता है। याकूब सिखा रहा है कि परमेश्वर के पापपूर्ण बालक की क्षमा की ''शर्त'' है। यह बहुत हद तक वैसा ही है जैसा यूहन्ना कहता है, ''यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है'' (1 यूहन्ना 1:9)। याकूब और यूहन्ना दोनों कहते हैं कि अपने पापों को मानने के लिए व्यक्ति के लिए परमेश्वर और अपने भाइयों दोनों के सामने इतना दीन होकर शुद्धता के लिए परमेश्वर से कहना आवश्यक है। यह वचन पाठ विशेष रूप से उससे सम्बन्धित नहीं है जिससे हम आराधना से पहले ''औपचारिक अंगीकार'' मांगते हैं, परन्तु इसमें निश्चित रूप से ऐसा होना शामिल है। न यह किसी ढंग की सिफारिश करता है जिससे अंगीकार होने चाहिए। स्पष्टतया कोई भी ढंग का इस्तेमाल हो सकता है यानी जैसा 15 और 16 आयतों में बताया गया है, यह सभा में हो सकता है, यह ऐल्डरों की उपस्थिति में हो सकता है, या किसी भाई का दूसरे भाई से हो सकता है, या यह किसी भी सुविधाजनक ढंग से हो सकता है, जिससे प्रभावित पक्षों को व्यक्ति के पश्चात्ताप की बात पता चल सके। परन्तु याकूब को *ढंग* की उतनी चिंता नहीं है, जितनी अंगीकार की प्रार्थना की *आवश्यकता* थी।

प्रभावकारी प्रार्थना का बल

उन समयों को बताने के बाद जब प्रार्थना की आवश्यकता होती है, याकूब कहता है, ''... धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है'' (5:16ख)। ऐसा लगेगा जैसे धर्मी जन वह व्यक्ति है जिसके पापों का अंगीकार हो गया है और उनकी क्षमा रुक गई है। उस आदमी की प्रार्थना से परिणाम मिल सकते हैं। हमारे लिए यह समझने के लिए कि इसका अर्थ क्या है याकूब एक उदाहरण देता है। वह कहता है, ''एलिय्याह भी तो हमारे समान दुख-सुख भोगी मनुष्य था; और उसने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की; कि मेंह न बरसे; और साढ़े तीन वर्ष तक भूमि पर मेंह नहीं बरसा। फिर उसने प्रार्थना की, तो आकाश से वर्षा हुई, और भूमि फलवन्त हुई'' (5:17, 18)। वह आपत्ति दोबारा इस प्रकार है: ''एलिय्याह भी तो हमारे समान दुख-सुख भोगी मनुष्य था।'' प्रार्थना और इसकी सामर्थ के बारे में हमने जो कुछ सीखा है हम फिर पूछते हैं कि ''*कैस?*'' हमने जो बात समझी है वह यह है कि एलिय्याह ने शक्ति के उसी स्रोत को खो दिया जो हमारे उपलब्ध है। हमारे लिए सीखा जाने वाला आवश्यक सबक यह है कि जीवन में शक्ति और बल केवल परमेश्वर की ओर से मिलता है। प्रार्थना न केवल हमें परमेश्वर पर निर्भर बनाकर बदल देती है बल्कि इसके द्वारा परमेश्वर हमारे चीज़ों को बदल सकता है।

सारांश

जब तक हम प्रार्थना करना नहीं सीखते तब तक हम उन कई आशिषों से वंचित रह सकते हैं, जिन्हें पाकर हम उनका इस्तेमाल परमेश्वर की महिमा और स्वयं के आत्मिक विकास के लिए कर सकते हैं। कहानी बताई जाती है कि हेनरी फोर्ड ने एक बार एक मिलियन डॉलर वाली जीवन बीमा पॉलिसी खरीद ली। उसके एक अच्छे मित्र ने, जो बीमा कारोबार में ही था, पूछा कि उसने पॉलिसी उससे क्यों नहीं खरीदी। उसे उत्तर मिला, ''तुम ने मुझ से कहा की नहीं।''

क्या इस वचन पाठ से आप चकित हैं कि परमेश्वर की कितनी इच्छी चीज़ें हमें केवल इसलिए नहीं मिली क्योंकि हम प्रार्थना के द्वारा उन्हें मांगते नहीं हैं। याकूब दिखाता है कि विश्वास से फर्क पड़ता है, वह फर्क हमें सिखाता है:

1. परमेश्वर के साथ लगातार संवाद बनाए रखें।
2. भरोसा के साथ परमेश्वर को पुकारें कि दयालुतापूर्वक हमारी आवश्यकाएं पूरी की जाएंगी।
3. परमेश्वर पर अपनी निर्बलता और पापी होने को मानते हुए और उसके ढंग के आगे समर्पण करते हुए उसे पुकारें।